International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 31-12-2022, Accepted: 17-01-2023, Published: 02-02-2023
Volume 9, Issue 1, 2023, Page No. 44-45

भारत में ऑनलाइन शिक्षाः नवक्रांति की शुरुआत

डॉ अंकुर ओमर
सहायक प्राध्यापक, वनस्पति शास्त्र, शासकीय महाविद्यालय सिलोड़ी, कटनी, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
कोविड के दौर ने विश्व का ऐसा कोई भी देश व क्षेत्र नहीं छोड़ा जहाँ इस महामारी का प्रभाव न पड़ा होद्य समय के साथ यह पाया गया है कि अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्र शिक्षा के क्षेत्र सहित बदल गया है। किसी भी अन्य क्षेत्र के विपरीत, शिक्षा क्षेत्र ने कई विकास और परिवर्तन देखें हैं फिर चाहे वह शिक्षा प्रणाली को गुरु–शिष्य परम्परा से बदलकर क्लास रूम टीचिंग या फिर प्रोजेक्टर या एलईडी से पढ़ाना हो या आज के समय के अनुरूप ऑनलाइन शिक्षण कक्षाएंद्य कई वर्षों से यह देखा गया है कि ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली नई शिक्षा प्रणाली के लिए एक शक्तिशाली दावेदार के रूप में उभरी है। तकनीकी विकास के साथ यह क्षेत्र सहज और सस्ता भी हो गया है जिसे अब सभी वर्गो के लोग अधिग्रहित कर सकते हैं। इस आर्टिकल के द्वारा ऑनलाइन शिक्षा की भिन्न आयामों को छूने की कोशिश की गयी है जिससे की इस क्षेत्र में जागरूकता का संचार हो और नए आयामों के साथ तेज़ी से प्रगति हो।

मूल शब्दः ऑनलाइन शिक्षा, शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, नई शिक्षण प्रणाली

शिक्षा का व्यापक अर्थ उसके संकुचित अर्थ से सर्वथा भिन्न है जो अपने आप में एक निश्चित समय और स्थान में चलने वाली शैक्षणिक प्रक्रिया के ठीक विपरीत मनुष्य के सामाजिक, मानसिक, व्यवहारिक, बौद्धिक और निरंतर विकास को समाहित किए हुए है और इसी शिक्षा में यदि तकनीकी को शामिल कर दिया जाए तो यह इसी विकास को सुगम, सुनियोजित और निरंतरता प्रदान करने में सहायक सिद्ध होती ह। टैगोर के अनुसार ''उच्चतम शिक्षा वह है जो हमारे जीवन में सभी अस्तित्व के साथ सामंजस्य पूर्ण संबंध बनाती है'' अर्थात सामाजिक और व्यवहारिक जीवन में आने वाली सभी सम और विषम परिस्थितियों के बीच सामंजस्य स्थापित करना ही शिक्षा है।

यूनेस्को के अनुसार, जब से कोविड–19 का प्रकोप शुरू हुआ, दुनिया भर के 138 देशों में 1.37 अरब छात्र स्कूलों और विश्वविद्यालयों के बंद होने से प्रभावित हुए हैं। लगभग 60.2 मिलियन स्कूल शिक्षक और विश्वविद्यालय व्याख्याता अब कक्षा में नहीं हैं (शैल श्रीवास्ताव 2022)

शैक्षणिक निरंतरता में किसी प्रकार की बाधा जहां विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास में रुकावट पैदा कर सकती है वही समाज के समुचित विकास की गति को बाधित कर सकती है स गत वर्ष कोरोना नामक विश्वव्यापी आपदा से मानव जीवन का कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा है। इस महामारी ने संपूर्ण विश्व के प्रत्येक क्षेत्र के विकास की गति को रोका तो नहीं अपितु इसकी गति को धीमा अवश्य कर दिया है। कई क्षेत्रों के साथ–साथ शिक्षा में भी इसके व्यापक प्रभाव को देखते हुए केंद्र और राज्य सरकारों ने ऑनलाइन शिक्षा पर जोर देते हुए शिक्षा की निरंतरता को महत्व दिया। भारत अन्य विकासशील देशों की तुलना में डिजिटल युग में तो काफी समय पहले ही प्रवेश कर चुका है परंतु तकनीकी का सर्वोत्तम उपयोग जिस तरह से इसको कोरोना काल में हुआ उससे मात्र शहर के ही विद्यालय और महाविद्यालय लाभान्वित नहीं हुए अपितु जहां गांव के छात्र–छात्राएं भी जो तकनीकी शिक्षा से कोसों दूर रहते थे वह भी ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से निरंतर पाठ्य सामग्री, पाठ्यक्रम और व्याख्यानों से लाभान्वित हुए।

आनलाइन शिक्षा पद्धति का व्यापक उपयोग भले ही किसी भी विषम परिस्थिति में हुआ हो परंतु अन्य विकसित देशों की भांति यदि भारत में भी इस पद्धति को भविष्य के लिए अनिवार्यता प्रदान की जाती है तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि विद्यालयों और महाविद्यालयों के साथ–साथ जहां शिक्षक अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों से अवगत हो पाएंगे वहीं छात्र–छात्राएं भी अंतरराष्ट्रीय व्याख्यान और संगोष्ठियों से ज्ञानार्जन कर पाएंगे।

लगातार विकास कर रहे आधुनिक भारत में आज भी विद्यार्थियों की संख्या की तुलना में विद्यालयों और महाविद्यालयों की संख्या कम है इस परिप्रेक्ष्य में भी जहां आनलाइन शिक्षा पद्धति कारगर सिद्ध होते हुए विद्यार्थियों को घर में ही शिक्षा प्रदान कर उनके रचनात्मक और सृजनात्मक विकास में सहायक होगी वहीं पाठ्यसामग्री से लेकर परीक्षा व आवेदन फार्म की ऑनलाइन उपलब्धता कागज के उपयोग को सीमित करते हुए वृक्षों के संरक्षण में सहायक सिद्ध होगी साथ ही छात्र विद्यालय व महाविद्यालय पहुंचने के लिए आवागमन के जिन साधनों का प्रयोग करते हैं उनका उपयोग भी कम होगा जिससे वायु प्रदूषण में भी कमी आएगी। इस प्रकार ऑनलाइन शिक्षा पद्धति पर्यावरण संतुलन में भी सहायक सिद्ध हो सकती है।

ऑनलाइन शिक्षा लंबे समय से चली आ रही इस परंपरागत धारणा को बदलने में सही साबित हो रही है कि ऑफलाइन कोर्सेस की महत्ता ऑनलाइन कोर्सेस से ज्यादा होती है। शिक्षा सदैव ही समाज में समानता लाने का एक प्रथम पायदान साबित होता है इस दृष्टिकोण की चर्चा नई शिक्षा नीति में भी की गई है कि विद्यार्थियों का निवास स्थान चाहे जहां भी हो, उनके रहन–सहन का स्तर चाहे जो भी हो, वे भले ही सामाजिक और आर्थिक रूप से हाशिए पर रह रहे समुदायों से हों, उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना केंद्र और राज्य सरकार दोनों की ही जिम्मेदारी है और इसे ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से संभव बनाया जा सकता है। लचीलापन किसी भी शिक्षा प्रणाली को सफल बनाने में एक मुख्य भूमिका निभाता है अतः ऑनलाइन कोर्सेस की सहायता से विद्यार्थी अपनी प्रतिभा एवं रुचियों के अनुसार अनेक कोर्सेस का चुनाव कर एवं अपनी क्षमताओं का विकास कर सामाजिक हित में अपना पूर्ण योगदान दे सकते हैं। इस प्रकार देश को भी परंपरागत रूप से चले आ रहे कोर्सेस और उन्हें करने वाले लाखों बेरोजगार युवाओं की भीड़ की तुलना में एक ऐसे युवा वर्ग का उपहार मिलेगा जो अपने आप में बहुमुखी प्रतिभा एवं विविधता लिए हुए होंगे और समाज के कुछ गिने–चुने क्षेत्रों के अलावा सभी क्षेत्रों के विकास में अपना सहयोग प्रदान करेंगे।

ऑनलाइन शिक्षा के साधन

ऑनलाइन शिक्षा पद्धति को सफल बनाने और इस कार्य में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के परस्पर सहभागिता के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने कई डिजिटल साधन प्रदान किए हैं जैसेः

- स्वयं ऑनलाइन कोर्सेज
- इ– पीजी पाठशाला
- स्वयंप्रभा
- नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी
- शोधगंगा
- विद्वान

ऑनलाइन शिक्षा के आंकड़े

केपीएमजी और गूगल की 2017 की रिपोर्ट के अनुसार अगर सिर्फ भारत की बात की जाए तो गत वर्षों में स्मार्टफोन के उपयोगकर्ताओं की संख्या में लगातार बढ़ोत्तरी दर्ज की गई है। भारत में 2016–17 में लगभग 290 मिलियन स्मार्टफोन उपयोगकर्ता थे और 2021 में इसी संख्या में लगभग 180 मिलियन नए उपयोगकर्ता जुड़ने की उम्मीद दर्शायी गयी थी जो की एक रिपोर्ट के 2022 के आकड़ों के अनुसार भारत में 600 मिलियन से जादा स्मार्ट फ़ोन यूज़र्स हो चुके हैं (के.पी.एम्.जी, 2017; सौरव आनंद, 2022) | इस अवधि के दौरान ऑनलाइन कार्यक्रम की पेशकश करने वाले एचईआई (HEI) की संख्या भी 2020–21 में 42 एचईआई से 38% बढ़कर 2021–22 में 58 हो गई। 2021–22 में ऑनलाइन शिक्षा के लिए नामांकन में 170% की बढ़ोतरी हुई जबकि मुक्त और दूरस्थ शिक्षा के लिए गैर–भौतिक नामांकन को नए ऊँचाइयों तक ले जाते हुए 41.7% की वृद्धि हुई (मानश प्रतिम गोहेन, 2022)।

ऑनलाइन सिक्षा के महत्वपूर्ण फायदे

1. ऑनलाइन शिक्षा के कार्यान्वयन के साथ, हम यात्रा, आवास और बोर्डिंग के खर्चों को बचाने में सक्षम होंगे और इस शुल्क में कमी का मतलब ऑनलाइन कक्षाओं के लिए कम शुल्क होगा।
2. भौतिक कक्षाओं के मुकाबले, डिजिटल कक्षाओं में सीमाएँ नहीं होती हैं।
3. भौतिक कक्षाओं में छात्रों की स्थानीय आबादी होती है जो की सीमित होती है लेकिन अगर हम डिजिटल कक्षाओं के बारे में बात करते हैं, तो शिक्षक न केवल स्थानीय आबादी बल्कि वैश्विक आबादी को भी संबोधित करने में सक्षम होंगे। फैकल्टी के मामले में भी, हम सीमित नहीं रहेंगे और दुनिया भर से एक विशेषज्ञ पेशेवर को नियुक्त करने में सक्षम होंगे।
4. ऑनलाइन व्यवस्था से हम वास्तव में पृथ्वी पर उपकार कर रहे हैं। कागज के निर्माण में पेड़ों का उपयोग किया जाता है, इसलिए यदि पाठ्यपुस्तकों का उत्पादन कम होगा, तो पेड़ों की कटाई की संख्या में काफी कमी आएगी।

ऑनलाइन एजुकेशन की चुनौतियाँ और भविष्य

भारत जैसे विकासशील देश में अनगिनत चुनौतियाँ हैंद्य ग्रामीण इलाके इतने अंदरूनी जगहों पर स्थित है की खराब नेटवर्क कनेक्टिविटी के कारण इन इलाकों के बच्चों के लिए लाइव सत्र आयोजित करना और उन्हें स्ट्रीम करना संभव नहीं है। इन इलाकों में (ग्रामीण भारत) ही लगभग 30% लोग कंप्यूटर साक्षर नहीं हैं और कई तो यह भी नहीं जानते कि कंप्यूटर कैसे शुरू किया जाता है। अगर हम देश के हर हिस्से में ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करना चाहते हैं तो कंप्यूटर का बुनियादी ज्ञान होना महत्वपूर्ण है। यही नहीं निम्न–वर्गीय समुदाय जैसे किसान, नौकरानियां, घरेलू कर्मचारी, सफाई कर्मचारी जिनकी आय कम है, लैपटॉप या कंप्यूटर का खर्च उठाना वास्तव में एक कठिन कार्य है। जिन जगहों में आधारभूत सुविधाएं उपस्थित हैं वहां अन्य चुनौती जैसे की शिक्षक सैद्धांतिक पहलुओं की व्याख्या तो कर सकते हैं, लेकिन छात्रों ने जो भी सीखा है उसे समझने के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता है, जो कि विज्ञान और व्यावहारिक कला जैसे विषयों में सबसे आम है। ऑनलाइन शिक्षा अपनी उंगलियों की नोक पर सर्वव्यापी सामग्री और डाटा के साथ निरंतर सीखने की प्रक्रिया का एक सुलभ साधन बनती हुई नजर आ रही है एवं इस शिक्षा पद्धति के साधन एवं प्राथमिक उपकरण के रूप में लैपटॉप और स्मार्टफोन हमारे सामने उभर कर आएंगे। आज शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी के सर्वोत्तम उपयोग को देखते हुए हम भारत के आशावादी भविष्य की कल्पना कर सकते हैं। जहां ऑनलाइन शिक्षण ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच बनाना बहुत आसान बना दिया है वहीं शहरी और ग्रामीण शिक्षा के बीच के अंतर की खाई को भी पाट दिया है अतः इस बात में कोई संदेह नहीं है कि आज भारत वास्तविक रूप से डिजिटल युग में प्रवेश कर चुका है।

सन्दर्भ सूची

1. शैल श्रीवास्तव. (2022) द फ्यूचर ऑफ़ ऑनलाइन एजुकेशन इन इंडिया. अवेलेबल फ्रॉम https://iimskills.com/the-future-of-online-education-in-india/
2. सौरव आनंद. (2022) इंडिया हस ओवर 1.2 बीन (इद) मोबाइल फ़ोन यूज़र्सः आई एंड बी मिनिस्ट्री. अवेलेबल फ्रॉमः https://www.livemint.com/technology/gadgets/india-has-over-***1-2***-bn-mobile-phone-users-i-b-ministry-***11668610623295.***html
3. मानश प्रतिम गोहेन. (2022) एनरोलमेंट फॉर ऑनलाइन एजुकेशन अप 170þ इन 2022, डिस्टेंस लर्निंग 42þ. अवेलेबल फ्रॉमः https://timesofindia.indiatimes.com/education/enrolment-for-online-education-up-***170***-in-***2022***-distance-learning-***42/***articleshow/***95133531.***cms
4. के पी एम जी (झच्डळ) एंड गूगल रिपोर्ट (2017). ऑनलाइन एजुकेशन इन इंडियाः 2021. अवेलेबल फ्रॉमः https://assets.kpmg/content/dam/kpmg/in/pdf/***2017/05/***Online-Education-in-India-***2021.***pdf